हिंदी और बंगला नवजागरण

भारतेंदु और बंकिमचंद्र के विशेष संदर्भ में

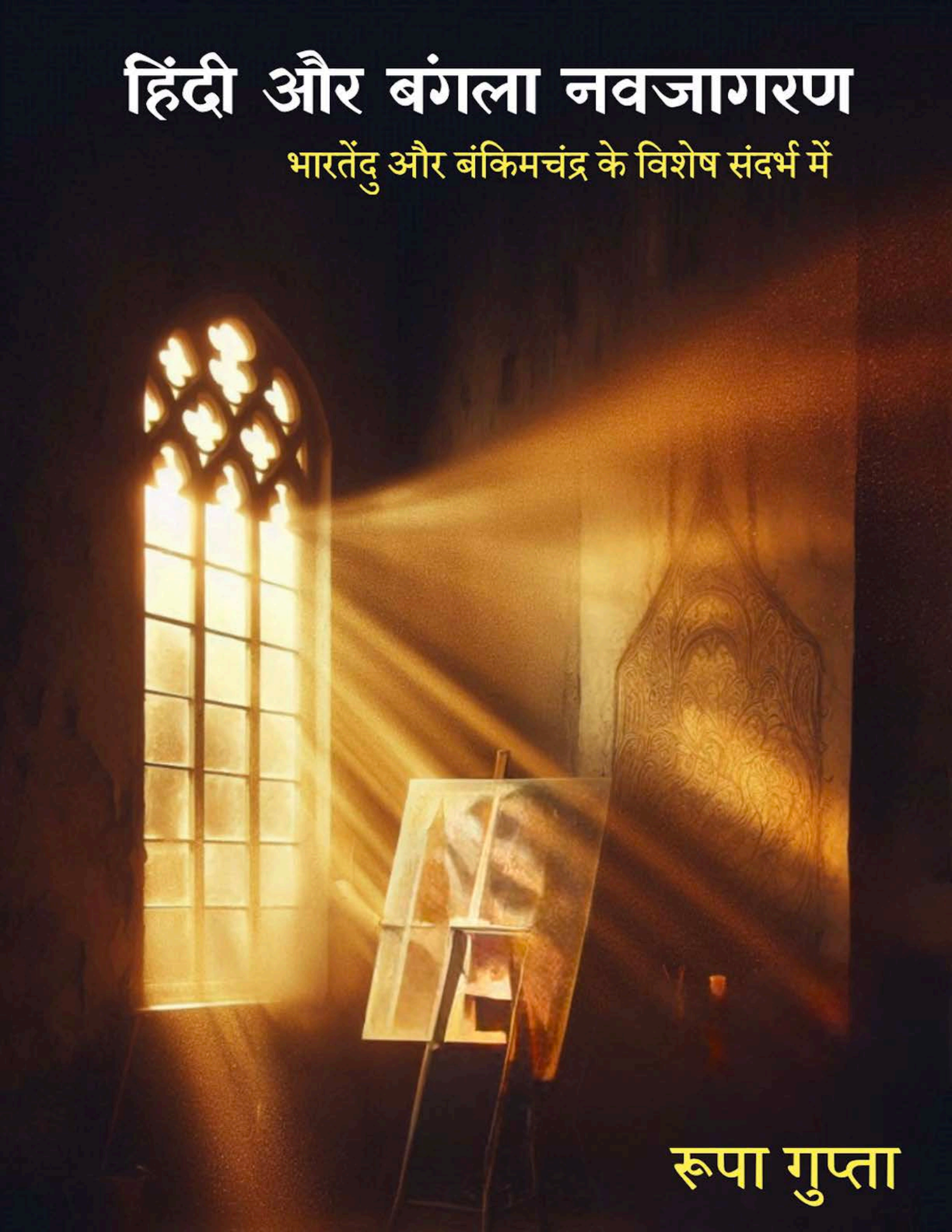

रूपा गुप्ता

हिंदी और बंगला नवजागरण

भारतेन्दु एवं बंकिमचन्द्र के विशेष संदर्भ में

रूपा गुप्ता

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन:अगस्त , 2025

© रूपा गुप्ता

लला के लिये

अनुक्रम

भूमिका

प्रथम अध्याय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय : व्यक्तित्व और कृतित्व 15

द्वितीय अध्याय

हिन्दी नवजागरण एवं बंगाल का नवजागरण 121

तृतीय अध्याय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के सामाजिक निबन्ध 157

चतुर्थ अध्याय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के राजनैतिक निबंध 236

पंचम अध्याय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के ऐतिहासिक निबन्ध 279

षष्ठ अध्याय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के धार्मिक निबन्ध 320

निष्कर्ष

परिशिष्ट-1 339

परिशिष्ट-2 342

परिशिष्ट-3 349

परिशिष्ट-4 384

परिशिष्ट - 5 389

ग्रन्थ-सूची 393

भूमिका

'भारतेन्दु एवं बंकिमचन्द्र के निबंधों में ऐतिहासिक चेतना' पर यह एम. फ़िल. शोध कार्य जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में सन् 92-94 में किया गया था। इससे पहले बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के निबंधों पर हिन्दी में विधिवत् चर्चा तो दूर उनके इस विपुल निबंध साहित्य का हिन्दी में अनुवाद भी नहीं हुआ था। बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में रूप नारायण पांडेय द्वारा बंकिमचन्द्र के निबंधों के अनुवाद की सूचना तो मुझे मिली किन्तु वह पुस्तक दुष्प्राप्य रही। अतः यह शोध कार्य बंगला में लिखे गए मूल निबंधों पर ही किया गया।

1998 में यह शोध कार्य 'भारतेन्दु एंव बंकिमचंन्द्र' शीर्षक से पुस्तक रूप में अविकल प्रकाशित हुआ। सन् 1994 बंकिमचन्द्र की मृत्यु शतवर्ष था अतः उनके 'निबंधों के अनुवाद का मुझे विचार आया, बाद में बंकिमचन्द्र के निबंधों का हिन्दी में अनुवाद कार्य करते समय मुझे इस पुस्तक में सुधार के अपने मूल विचार का ध्यान आया। बंकिमचन्द्र के निबंधों के अनुवाद की अपनी दो पुस्तकों ‘‘बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के निबंध एक संकलन' (2010) और " बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय के हिन्दी में अप्रकाशित निबंध (2012) के प्रकाशन के पश्चात् इस पुस्तक का परिवर्द्धन और भी अनिवार्य लगने लगा। हिन्दी और बंगला नवजागरण के दो पुरोधाओं के चिन्तन साहित्य की पुनर्प्रस्तुति इसलिए और भी संगत लगी कि बंकिमचन्द्र के जन्म के 175 वर्ष पूरे होने वाले थे। भारतेंदु हरिशचंद्र का नाटककार रूप इतना महत्वपूर्ण रहा कि उनके एकाध निबंधों के अतिरिक्त अन्य पर बहुत कम चर्चा हुई।

हिंदी और बंगला नवजागरण को नई दिशा देते ये निबंध ऐतिहासिक चेतना संबंधी समझ का महत्वपूर्ण उपकरण थे।

इस कार्य का एक विशिष्ट कोण ऐसे दो चिन्तकों का तुलनात्मक अध्ययन है जो आपस में मित्र हैं तथा अपने-अपने देशकाल के अनुसार देशचिन्ता में लगे हुए हैं। अपनी भाषा के प्रति उनका सम्मान और उनका आत्मविश्वास तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों के पुनर्परीक्षण की माँग करता है। बंगला में जहाँ एक ओर अपनी भाषा के प्रति आत्मविश्वास की उत्तरोत्तर वृद्धि होती है, हिन्दी में भी इसके भंडार को भरने विभिन्न लेखकों को प्रोत्साहित कर अनेक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का भरपूर कार्य हुआ। अन्य भाषाओं से अपने अस्तित्व के द्वंद्व में हिंदी न केवल 'नई चाल में ढली' बल्कि अपने न्याय अधिकार के लिए सन्नद्ध हुई। दूसरी भाषाओं के बुद्धिजीवियों से अधिक सगापन दिखाते हुए हिंदी बौद्धिक ह्रास की जड़ कम से कम इसके उद्भव काल में तो नहीं है। हिन्दीभाषियों की दिनोंदिन बढ़ती आत्महीनता और परान्मुखता का कारण बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में खोजा जाना उचित होगा, इसका दोषारोपण उन्नीसवीं शताब्दी पर किसी भी हाल में नहीं किया जा सकता क्योंकि इस शती के मनीषियों की रचनाधर्मिता का केन्द्र बिन्दु मातृभाषा से लगाव और उसे ससम्मान प्रतिष्ठित करना है । औपनिवेशिक भारत में इस दुष्कर कार्य के सम्पादन की कठिनाइयों का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। इस दिशा में अपनी-अपनी भाषा के लिए भारतेन्दु हरिश्चंद्र एवं बंकिमचंद्र का योगदान युगांतकारी और अत्यन्त प्रेरणास्पद है।

आधुनिक हिन्दी के जन्मदाता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवं आधुनिक बंगला के जन्मदाता बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का कार्यकाल एवं कार्यशैली लगभग समान एवं एक हैं। भारतेन्दु एवं बंकिमचन्द्र ने एक ही औपनिवेशिक शासन के अन्तर्गत भिन्न स्थानों पर एक जैसे उत्तरदायित्व का निर्वाह किया - भाषा परिष्करण एवं शैली- निर्माण तथा साहित्य का जन-सामान्य से सम्पर्क। उनके युग ने जो उन्हें गुरूतर कार्यभार सौंपा था उसका सम्पादन उन्होंने युग की अपेक्षाओं से बढ़कर किया। अपने साहित्य कर्म एवं पत्रकारिता से दोनों ने अपने देशवासियों को उस नवीन चेतना से परिचित करवाया जो किसी भी राष्ट्र के स्वावलंबी होने की दिशा में अत्यावश्यक होती है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र मूलतः नाटककार एवं बंकिमचन्द्र मूलतः उपन्यासकार हैं । इन दोनों का यही रूप इतना बहुचर्चित है कि उनका निबन्धकार रूप उपेक्षित ही रह गया है। भारतेन्दु साहित्य में नाटक ही चर्चा के केन्द्र में रहा। धर्म, दर्शन, समाज, राजनीति, साहित्य, इतिहास, यात्रा आदि पर लिखे गये उनके निबन्धों पर विस्तृत चर्चा नहीं के बराबर हुई। हिन्दी भाषा भाषियों के लिए बंकिम का उपन्यासकार रूप ही प्रबल रहा। पूरे देश में बंकिमचंद्र इसी रूप में अधिक पहुँचे। इसका सबसे बड़ा प्रमाण उनके निबंधों के बहुत बड़े अंश का हिन्दी में अनुवाद तक न होना है।

उन्नीसवीं सदी के साहित्यकार केवल मनोरंजन अथवा भावोत्कर्ष के वाग्विलास के लिये रचनाकर्म नहीं कर रहे थे। साहित्यिक उत्कृष्टता के निर्वाह के साथ समाज चिन्ता उनका मुख्य लक्ष्य थी । अतः कमोबेश हर साहित्यकार ने अखबार, पत्र-पत्रिकाओं का